॥ श्री ॥

मकरध्वज

चन्द्रोदय और स्वर्णसिंदूर
बनाने की विधि।

"करोत्यग्निबलं पुंसां, वलीपलितनाशनः
मेधायुःकान्तिजननः कामोद्दीपनकृद्रसः॥"

रससंग्रहसारः

लेखक—

विवेचक।

प्रथम संस्करण] जनवरी १९२७ [मूल्य १ प्रति ॥)

बाकी टाइटिल के तीसरे पृष्ठ पर देखिये।

श्रीः

मकरध्वज

अथवा

चन्द्रोदय, स्वर्णसिंदूर विधान ।

(सब से बड़ी सेवनविधि सहित)

लेखक—

श्रीयुत 'विवेचक'

सम्पादक

राजवैद्य पं० किशोरीदत्त शास्त्री

प्रथम बार] जनवरी १९२७ [मूल्य ||)

प्रकाशक—
चिकित्सक कार्यालय,
कानपुर

मुद्रक
श्री रामकिशोर गुप्त
साहित्य प्रेस,
चिरगाँव (झाँसी)

भूमिका

भारतीय रसायन विज्ञान की अमूल्य औषधि मकरध्वज का अक्षुण्ण अस्तित्व पहिले भी था और अब भी है। परन्तु पहिले इसका प्रचार उच्च कोटि के वैद्य समाज में था और अब सर्व साधारण जगत् भी इससे परिचित होता जा रहा है।

परन्तु खेद है कि अभी विज्ञापनों द्वारा ही इसके प्रचार की धूम है, गुण दृष्टि से नहीं। विज्ञापन वाले प्राचीन कीर्त्ति को लेकर आडंबर बाँध रहे हैं। पर भाव ताव की कमी और गुणहीनता उनकी पोल खोल रही है। मकरध्वज बंगाल में बहुत बनता है और बहुत बिकता है। यहाँ तक कि वहाँ यह घर बरताऊ चीज हो रही है। जैसे वहाँ इसका प्रचार विशेष है वैसे ही इसके प्रकार भी बहुत मिलते हैं। यू० पी० में जिस प्रकार डोंडिया खेड़े वालों की कीर्त्ति है, बंगाल में भी वैसे रस निर्माताओं की कमी नहीं है। वे न तो वालुका यंत्र काम में लाते, न वलिजारण ही करते हैं। वे हिंगुल का ही पुनः पाक करते हैं और मिट्टी के पात्र में करते हैं और कुछ घंटों में ही माल तयार कर देते हैं। इस प्रकार का मकरध्वज वाह्य दृष्टि से औने पौने रंग रूप को छोड़कर जाना नहीं जा सकता कि यह असली है या

कृत्रिम। जब गुण परीक्षा का समय आता है तब—"काक: काक: पिक: पिक:" का ज्ञान होता है।

पढ़े लिखे बंगाली कविराज भी द्विगुण गन्धक से अधिक गन्धक जारण करने की प्रक्रिया नहीं करते, कौन आफत माल ले। फिर उनका मेटरिया मेडीका—"भैषज्यरत्नावली" का पाठ भी उन्हें द्विगुण गन्धक से मकरध्वज बनाना सिखाता है, तब वे और भी निर्दोष हो जाते हैं। पर यह बात उचित नहीं।

मकरध्वज रस है, इसलिये इस विषय में हमें सदा रस-ग्रन्थों की आज्ञा ही मानना चाहिये। इस विषय में रस ग्रन्थों की यह आज्ञा है—

"रस गुण वलि जारणं विनायं
नखलु रुजाहरणक्षमो रसेन्द्रः।
न जलद कल धौत पाक हीनः
स्पृशति रसायनतामिति प्रसिद्धिः॥"

अर्थात् पारद से छः गुना गन्धक जीर्ण हुये विना पारद में रोगनाशक शक्ति नहीं प्राप्त होती और अभ्र तथा सुवर्ण जारण किये विना रसायनता (देह लौह सिद्ध) का गुण नहीं आता। जब शास्त्र की आज्ञा न मान कर हम द्विगुण गन्धक जारित मकरध्वज काम में लाते हैं तब कैसे उससे रोगों का नाश करने का बीड़ा उठा सकते हैं। यह बात धृष्टता की ही कही जा सकती है कि हम द्विगुण गन्धक जारण कर मकरध्वज बनावें—उसे षड्गुण बलिजारित बताकर रोग नष्ट करने की आशा रखें।

इसी विषय में एक बात और कहने की है। कविराज लोग मकरध्वज बनाते समय चाहे सुवर्ण भी डालते हों, पर वे पारद संस्कार के झगड़े से कोसों दूर भागते हैं। इस दशा में साधारण शुद्ध पारद में स्वर्ण डालना न डालना व्यर्थ सा है। क्योंकि दीपन संस्कार किये विना पारद में सुवर्ण के गुण खींचने की असली शक्ति ही नहीं पैदा होती है। यह दीपन संस्कार पारद के ८ संस्कारों में सब से पिछला संस्कार है। इस संस्कार के पीछे ही गन्धक या सुवर्ण का जारण करने की आज्ञा है। जब तक पारद में इस संस्कार द्वारा अग्नि दीपन नहीं हो जाता, तब तक वह सुवर्ण को जीर्ण नहीं कर सकता।

इसी बात को लक्ष्य रख कर बार बार इसके गुणा गुण की परीक्षा करके अष्ट संस्कार संस्कृत पारद से असली मकरध्वज बनाने का विधान इस पुस्तक में दिया गया है। और इस प्रकार से तयार किये मकरध्वज का नमूना भी पुस्तक के ग्राहक को मिलता है। जिसमें वह इस विषय को सप्रमाण जान सके।

यहाँ पर कुछ विज्ञापन वाजों पर दृष्टिपात किये विना नहीं रहा जाता। बहुत से विज्ञापक अपनी धाक जमाने के लिये मकरध्वज के बनाने में होने वाले खर्च का चिट्ठा बताते हैं। पर हँसी आती है उनका हिसाब देख कर। इस पर इतना ही कहना काफी है कि कोई भी उस रीति से उतने ही खर्च से गुणकारी मकरध्वज बना कर ही दिखा दे? वहाँ तो मह से

भद्दे विधान से बनाया जाता है और भद्दे से भद्दे भाव में बेचा जाता है। इसके गुणों की परवाह नहीं। भोले भाले ग्राहक भी विश्वास कर लेते हैं। यदि भद्दे तरीके से बना हुआ माल २) ४) ८) तो क्या ॥) तोला भी बेचा जाय तो खासो मुनाफा है, धर्म के दूने हैं। चाहे जब बाजी लगा लीजिये। इसीलिये तो तेज भाव बेचने वाले एक सज्जन अपने मकरध्वज पर ७५) सैकड़ा कमीशन देते हैं? फल यह होता है कि दो रुपये वाला--आठ रुपये वाला या चौवीस और अस्सी रुपये वाला सब बराबर बैठते हैं। क्योंकि दीपन संस्कार के विना मकरध्वज में सुवर्ण का गुण नहीं आता और षड् गुण गन्धक जीर्ण हुये विना उसको रोगघ्न शक्ति का विकास नहीं होता।

इसी बात को प्रकाशित करने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। आशा है कि रस-गुण प्रेमी सज्जन इससे अपना ज्ञान बढ़ाकर उचित मार्ग पर चलने का प्रयत्न करेंगे।

—विवेचक।

रसेन्द्रप्रशस्तिः ।

मारदो गतमाराणां पारदः पारदो रुजाम् ।
व्यापारदः सुभिषजां शारदासारदोऽस्तु नः ॥

*　*　*　*

पारद एव गरीयान्
धातुवनस्पतिगणोपरसगिलने ।
अभ्रक एव वरीयान्
यथा लये योगिनां नयने ॥

*　*　*　*　*

ये नाम विविधव्याधिजराजीर्णकलेवराः ।
तेषामामरणं सौख्यं दातुमीशो रसेश्वरः ॥

मकरध्वज

अथवा

चन्द्रोदय, स्वर्ण सिंदूरविधान

हिंगुल (हिं० सिंगरफ)

उत्तमता—

हिंगुल खान से निकलता है और पारद गंधक से बनाया जाता है। बाज़ार में अधिकांश यह बनाया हुआ ही मिलता है। यह अधिक चमकदार मुलायम और वजनी लेना चाहिए।

शोधनविधि—

हिंगुल को पीसकर नींबू के रस या नींब की पत्ती के स्वरस में २। ३ दिन घोटकर सुखा लेना।

हिंगुल से पारद निकालना—

शुद्ध हिंगुल को एक हांडी में भरकर दूसरी हांडी को पहिली हांडी के मुख पर औंधाकर दोनों का मुँह जोड़कर कपरौटी करदे। जिस हांडी में हिंगुल हो उसे चूल्हे पर

साधी चढ़ा दे। इस प्रकार दूसरी खाली हाँडी का पेंदा आसमान को ओर रहेगा। इस ऊपर की हांडी के पेंदे पर एक कपड़े की गद्दी ४। ५ तह करके पानी में भिगोकर रख दें। जब कपड़े की तरी कम हो जाय तब फिर कपड़ा तर करदें। इस प्रकार पाव भर हिंगुल हो तो ८ घण्टे को अग्नि दें। फिर स्वयं ठण्ढा होने पर ऊपरी हाँडी के भीतर लगे हुए पारद को निकालकर कपड़े से छान लें। इस क्रिया से हिंगुल से आधा या कुछ कम पारद निकलता है। अच्छे बढ़िया हिंगुल में आधे से कुछ अधिक पारद निकलता है।

पारद (हिं० पारा)

उत्तमता—

पारद का वजन खूब हो, हिलाने से अधिक चञ्चल हो, सूर्य्य की ज्योति में रखने से स्वच्छ दर्पण को तरह चमकता हो, बाहरी भाग में सफेद और भीतरी भाग में काला मालूम होता हो।

शुद्धि—

पारद ४० तोले	सज्जीखार २ तोले
जवाखार २ तोले	सुहागा २ तोले
पान का रस २० तोले	अदरख का रस २० तोले

सब चीजें एक साथ मिलाकर घोटना। रस सूख जाने

पर पारद को जल से धोकर कपड़े से छान लेना। कपड़े की २।३ तह बनाकर दो या तीन बार छानकर शीशी में रख लेना। यह साधारण शुद्धि है और हिंगुल से निकाले हुए पारद पर केवल इसी शुद्धि की आवश्यकता है।

विशेष शुद्धि—

घीकुआर का गूदा २० तो० | चित्रक का चूर्ण १० तो०
पीली सरसों १० तो० | त्रिफला-काथ २० तो०
भटकटैया का काथ २० तो० | पारद ४० तो०

सब चीज़ें खरल में डाल कर ३।४ दिन घोटना और सूखने पर जल से धोकर सूखे कपड़े की तहों में ३।४ बार पारद को छान लेना। यह सब प्रकार के पारद की विशेष शुद्धि है।

आठ संस्कार—

नीचे लिखे आठ संस्कारों का प्रयोग ऊपर लिखे शुद्ध पारद का किया जाता है। यह संस्कृत पारद रसायन-विधान (मकरध्वज आदि रसायन) बनाने में प्रयुक्त होता है।

प्रथम संस्कार—

×छोटी पीपल | ×काली मिरच
×चित्रक | ×अदरख
×त्रिफला | ×अमली (फल)

सबका काथ १ सेर

निंबू का रस १० तो०	दही का तोड़ ४० तो०
जवाखार २॥ तो०	सज्जीखार २॥ तो०
सेंधा नमक २। तो०	पारद ४० तो०

कांजी का पानी ५ सेर

×चिन्ह वाली औषधियां १ सेर लेकर १६ सेर पानी में क्वाथ बनाकर ८ सेर शेष रहने पर छान लें। इसी में खार, नींबू का रस, दही का तोड़ और नमक डालकर मिट्टी के पात्र में चूल्हे पर चढ़ादें। पारद को डबल कपड़े की पोटली में रखकर इसी पात्र में लटकादें। मिट्टी के पात्र के मुख पर एक लकड़ी लगी रहे उसी लकड़ी के सहारे पर मज़बूत सूत की सुतली से पारद की पोटली द्रव भाग में लटकाती रहे। जब द्रव भाग जल कर कम होने लगे और पारे की पोटली से द्रव नीचे चला जाय तभी उसमें कांजी का पानी डाल दिया जाय। मिट्टी के पात्र में ये द्रवौषधियां आधी भरी रहें। इस विधान को दोला-यन्त्र कहते हैं। आगे दोला-यन्त्र लिखने से इसी विधान को याद रखना चाहिये। पारद का यह प्रथम संस्कार स्वेदन-संस्कार कहलाता है। जब मिट्टी के पात्र में द्रव थोड़ा रह जाय तब पारद की पोटली निकाल ली जाय।

दूसरा संस्कार—

दूसरा संस्कार उसी पारद का होना चाहिये जिसका प्रथम संस्कार (स्वेदन) हो चुका हो। ये संस्कार क्रमशः एकही पारद के होते हैं। यदि सब संस्कार करने हों तो पहिले ही से ४० तो०

से कम पारद कभी न लेना चाहिये, क्योंकि सब संस्कार करने पर पारद की मात्रा बहुत कम रह जाती है। दूसरे संस्कार का नाम मर्दन संस्कार है।

सेंधा नमक २ तो०	राई २ तो०
अदरख २ तो०	घर का धुवाँसा २ तो०
हलदी २ तो०	त्रिफला २ तो०
सोंठ २ तो०	ईंटखोरा २ तो०

सब चीजें चलनी से छानकर खरल में डालना और इसके साथ स्वेदित पारद डालकर तीन दिन तक घोटते रहना। फिर जल से धोकर पारद को कपड़े की तहों से छान लेना।

तीसरा संस्कार—

जवाखार २ तो०	सज्जीखार २ तो०
सुहागा २ तो०	पाँचों नमक १० तो०
नींबू का रस १० तो०	अमली का पन्ना १० तो०

सब चीजें पारद के साथ खरल में डालकर दो दिन घोटना। जब घोटने पर रस सूख कर खार और पारद की पिट्ठी हो जाय जिसमें पारद अलग न दिखाई दे, तब घोटना बन्द करके पानी डालकर धोना और पारद को कपड़े की तह से छान लेना। इस प्रकार की घुटाई को—जिसमें पारद लीन हो जाय—दिखाई न दे—नष्टपिष्टि कहते हैं। यह मूर्च्छन संस्कार है।

चौथा संस्कार—

सुहागा ५ तो० सेंधा नमक ५ तो०

शहद २ तो० नींबू का रस २ तो०

सब चीजें पारद सहित खरल में डालकर घोटना। गोला बन जाने पर गोले को पोटली में रखना और*दोलायन्त्र में स्वेदन करना। दोलायन्त्र वाले मिट्टी के बड़े पात्र में द्रव की जगह काँजी का पानी या दही का तोड़ भरना चाहिये। इस प्रकार दो या तीन बार करना चाहिये। इसका नाम उत्थापन संस्कार है।

पाँचवाँ संस्कार—

सज्जी खार २ तो० जवा खार २ तो०

पाँचों नमक ५ तो० हींग १ तो०

ऊपर लिखी चीजों के साथ खरल में पारद डालकर नींबू के रस से नष्टपिष्ट कर †गोला बना लेना। इस गोले को मिट्टी के ऐसे पात्र में रखना, जिसमें ४ सेर जल भरा जा सकता हो। इतना ही बड़ा दूसरा मिट्टी का पात्र लेकर औंधा कर दोनों के मुँह जोड़ कर कपड़मिट्टी कर देना। फिर इस प्रकार चूल्हे पर रखना जिसमें पारद का गोला नीचे के पात्र के पेंदे में आग पर रहे और दूसरे पात्र का पेंदा ऊपर आस-

---

*देखो पारद का (स्वेदन) संस्कार।

†देखो पारद का तृतीय (मूर्च्छन संस्कार)।

मान की ओर रहे। इसमें १ दिन भर अग्नि देता रहे। ऊपर के पात्र के पेंदे पर कपड़े को पानी में भिगो कर रख दे, जिससे ऊपरी पेंदा बराबर ठंढा रहे और अग्नि की गरमी से पारद गोले से निकल कर ऊपरी पात्र के पेंदे में धुआँ के रूप में जम जाय। दिन भर की अग्नि देकर अग्नि चूल्हे में से निकाल ले और इस डमरूयंत्र को रात भर ठंढा होने दे। प्रातःकाल इस यन्त्र को धीरे से खोल कर ऊपरी पात्र के ऊपरी पेंदे से पारद निकालकर कपड़े से छान ले। यदि अग्नि की कमी से नीचे के पात्र की राख में पारद बाकी रहने की शंका हो तो उस राख को फिर डमरू-यन्त्र में चढ़ाकर बाकी पारद निकाल ले। इस संस्कार में अग्नि के ठीक लगने से पारद ठीक निकलता है। तीव्राग्नि से उड़ कर पारद कभी कभी कम निकलता है या अग्नि की कमी से पारद नीचे पड़ा रहकर ऊपर कम चढ़ता है। यह पाँचवें संस्कार पातन-संस्कार का एक भेद ऊर्ध्वपातन संस्कार है।

हड़ की छाल ३ तो०	बहेड़े की छाल ३ तो०
राई ३ तो०	सेंधा नमक ३ तो०
चित्रक ३ तो०	सहिंजन के बीज ३ तो०

सब चीजें पीस कर बारीक चूर्ण कर ले। इसके साथ ऊर्ध्वसंस्कार-संस्कृत पारद को नींबू के रस से घोट कर नष्ट पिष्ट कर ले। जब पिट्ठी खूब बारीक हो जाय तब पहले पातन संस्कार की तरह के दो मिट्टी के पात्र लेकर एक पात्र

के भीतरी पेंदे पर इस पिट्टी का अच्छी प्रकार लेप कर दे। और दूसरे पात्र से इस पात्र का मुँह जोड़कर कपरौटी कर दे। पात्र को सुखा कर भूमि में गाड़ दे। भूमि में गाड़ते समय यह ध्यान में रहे कि जिस पात्र के पेंदे पर भीतर की ओर पिट्टी का लेप किया है वह ऊपर की ओर जमीन के बराबर रहे और बाकी सब का भाग उस ज़मीन के गढ़े में दब जाय। इधर उधर (पात्र के चारों तरफ) गढ़ा खाली हो तो मिट्टी से भर दे। इस प्रकार औषधि वाले पात्र का पेंदा ज़मीन के बराबर रहना चाहिये और उस पर १०×१० कंडों की अग्नि २ या ३ बार जलानी चाहिये। फिर ठंढ हो जाने पर राख हटा कर यन्त्र खोलना चाहिए। इसमें नीचे वाले पात्र में जो कि जमीन में नीचे की ओर गाड़ा होता है पारद निकलता है। इस नीचे के पात्र में कोई कोई वैद्य थोड़ा जल भर दिया करते हैं। इससे भी कोई हानि नहीं। ऊपर से अग्निताप पाकर पारद नीचे की ओर गिरता है। यह पातन संस्कार का एक संस्कार अधः पातन संस्कार है।

इस प्रकार अधः पतित पारद को ऊपर लिखी औषधियों के साथ घोट कर गोला बना लें। इस गोले को मिट्टी के पात्र में रख कर दूसरे पात्र का मुँह जोड़ कर कपड़ मिट्टी कर दे। जिस पात्र में गोला हो उस पात्र के उसी भाग को जिस तरफ गोला हो चूल्हे पर चढ़ा कर १ दिवस या तीन प्रहर (पौन दिन) की अग्नि दे। इस बार डमरू यन्त्र के दोनों पात्र

बराबर तिरछे रहना चाहिए। यदि एक पात्र (औषधि वाला) चूल्हे पर हो तो दूसरा (खाली पात्र) चूल्हे के बराबर ही किसी जल के पात्र में रक्खा रहना चाहिए। जिसमें अग्नि से तपा हुआ पारद उड़कर बराबर वाले खाली पात्र में पहुँच जाय। इस संस्कार क ‥ यंक् पातन संस्कार कहते हैं और यह पातन संस्कार का हो भेद है। इन संस्कारों में पारद विशेष कम हो जाता है। इसमें खूब सतर्कता रखनी चाहिये। ये तीनों संस्कार कर लेने पर पाँचवाँ पातन संस्कार पूरा होता है।

छठा संस्कार—

पारद, पारद से चतुर्थांश सेंधा नमक, पारद से चौगुना जल एक शीशी में भर कर अच्छी प्रकार डाट लगा दी जाय और पृथ्वी में तीन दिन के लिये यह शीशी गाड़ दी जाय। चौथे दिन निकाल कर पारद को कपड़े से छान लिया जाय। यह बोधन संस्कार है।

सातवाँ संस्कार—

पुनर्नवा	सरफोंका
गोखरू	महावला
मकोय	ब्राह्मी
विष्णुक्रांता	चौराई
तुलसी	गगेरन
शतावर	धतूरा

गुचं	सेंधा नमक १

इन चीजों में से जितनी भी औषधियां मिलें सब की तौल मिलाकर १। सेर कर ले। इसे अठगुने पानी में औटा कर चतुर्थांश बाकी रख कर छान लें। इसी काढ़े में दोला यन्त्र द्वारा छठा संस्कार किया हुआ पारद पोटली में लटकाकर स्वेदन करले। ❀ इस संस्कार का नाम नियमन संस्कार है। इससे पारद की चंचलता कम हो जाती है।

आठवाँ संस्कार—

कसीस ऽ-	काली मिर्च ऽ-
फटकड़ी ऽ-	सहिंजन के बीज ऽ-
सुहागा ऽ-	पाँचों नमक ऽ-
राई ऽ-	सज्जीखार ऽ-

सब चीजों को चित्रक के काढ़े से बारीक पीसकर पिट्ठी बना ले। चौथियाई पिट्ठी में पारद को घोटकर नष्ट पिष्ट कर ले और पोटली बना कर दोला यन्त्र में १ दिन स्वेदन करे। स्वेदन के पात्र में कांजी का पानी और चित्रक का काढ़ा सम भाग और बाकी पिट्ठी मिला कर भर दे। इस संस्कार का नाम दीपन संस्कार है। इससे पारद में सुवर्ण और उपरसों के जीर्ण करने की शक्ति पैदा होती है। इन आठों संस्कार से संस्कृत किया हुआ पारद ही मकरध्वज रसायन तथा अन्य रसायनों के बनाने योग्य होता है।

❀ देखो पारद का प्रथम (स्वेदन) संस्कार।

गंधक जारण—

पारद में अग्नि के द्वारा कई गुना गन्धक-जारण किया जाता है। आचार्यों का मत है कि छः गुने गन्धक को जारण किये हुए पारद (मकरध्वज, चन्द्रोदय, रससिंदूर) से ही रोगों का नाश हो सकता है। जो लोग मामूली १।२।३ गुना गन्धक जारण कर के मकरध्वज आदि बना लेते हैं वे रोगो को पूर्ण लाभ नहीं पहुँचा सकते। पूर्ण लाभ उसी मकरध्वज, चन्द्रोदय या स्वर्णसिंदूर से हो सकता है जिसके पारद में ८ संस्कार द्वारा सुवर्ण-जारण करने की शक्ति पैदा की जा चुकी हो।

मकरध्वज रस—

शुद्ध पारद ८ तोला　　　　शुद्ध गन्धक ४८ तोला

सोने के वर्क १ तोले

खरल में पारद डालकर घोटना और घोटते समय १।१ सोने का वर्क डालते जाना। घोटने से सोने का वर्क पारद में अदृश्य होता जाता है। जब सोने के वर्क पारद में मिल जाँय तब थोड़ी थोड़ी शुद्ध और पिसी हुई गन्धक मिलाकर १ दिन घोटना चाहिये। घोटने से इसका रंग ठीक काजल जैसा घोर काला हो जाता है और ध्यान देकर देखने पर भी इसमें पारद की चमक नहीं दिखाई देती। इसी से इसका नाम कज्जली हो जाता है। कज्जली तयार हो जाने पर कपास के फूलों का स्वरस या घीकुआर

का रस अथवा बरगद की लटकती हुई मुलायम और सुर्ख जड़ों के रस से २ या ३ दिन तक घोट कर सुखा लेना ।

इसके सूखने पर सात कपरौटी की हुई आतशी शीशी में भरना । आतशी शीशी इतनी बड़ी होनी चाहिये जिसमें कज्जली भरने पर नली छोड़ कर शीशी का पौन हिस्सा खाली रहे । सिर्फ चौथिआई भाग में कज्जली भर जाय ।

चौकोर बड़े चूल्हे पर एक मोटी नाँद या खूब मजबूत चौड़े मुँह का मटका जिसमें कज्जली वाली आतशी शीशी आसानी से आ जाय और शीशी रख देने पर भी उसमें शीशी के चारों ओर कम से कम १०।१० अंगुल बालू भरी जा सके । इस नाँद को चूल्हे पर चढ़ाया जाय और नाँद के पेंदे में बीचों बीच आध इंच का गोल छेद कर दिया जाय । इसी छेद पर अभ्रक का पत्र रखकर कपरौटी की हुई और औषधि (कज्जली) भरी हुई शीशी सीधी रखदी जाय और शीशी के गले तक नाँद में बालू भर दी जाय । नाँद के फूटने का भय हो तो उसे लोहे के तारों से बाँध कर मजबूत मिट्टी के गारे से लेप दी जाय । यह बालुका-यन्त्र कहा जाता है ।

इस प्रकार करके चूल्हे में लकड़ी की तेज आग दी जाय । ४ घंटे बाद एक लोहे की लम्बी शलाका से यह देखा जाय कि कज्जली गल कर ढीली हो गई है या नहीं । कज्जली गलने पर अग्नि कुछ कम कर दी जाय, नहीं तो कभी कभी कज्जली उबल कर शीशी से बाहर आ जाती है । यह मध्यम अग्नि बराबर

६ दिन ६ रात एक सदृश जलती रहनी चाहिये। यदि शीशी के भीतर अग्नि लगकर ज्वाला निकलने लगे तो शीशी के मुख पर कोई चीज़ ढक देनी चाहिये और थोड़ी देर बाद शीशी का मुँह खोल देना चाहिये।

जब शलाका देने से काला द्रव्य पककर कुछ लाल रूप में आने लग जाय तब शीशी के मुख पर ईंट की या मिट्टी की डाट लगाकर शीशी बंद कर दी जाय और २४ घंटे (एक दिन रात) अग्नि देकर बंद कर दी जाय।

दो तीन दिन में बालू और शीशी ठण्ढी हो जाने के बाद बालू हटाकर धीरे धीरे शीशी निकाल लेनी चाहिए। इस शीशी के तोड़ने पर उसकी नली में या उससे नीचे लाल रंग की वज़नदार दवा चिपकी हुई निकलती है। इसी को मकरध्वज कहते हैं। चन्द्रोदय अथवा स्वर्णसिंदूर भी इसे कहते हैं। ये नाम सिर्फ़ देशभेद से हैं। न तो ये चीज़ें भिन्न होती हैं, न इनकी क्रिया या गुण ही भिन्न होता है। बंगाल प्रांत वाले इसे मकरध्वज, बम्बई प्रान्त वाले इसे स्वर्णसिंदूर और संयुक्तप्रान्त वाले इसे चन्द्रोदय कहते हैं। शीशी के नीचे के भागों में जो भस्म निकलती है उसमें सोने का अंश अधिक होता है। कुछ वैद्य उसे सोने की भस्म की जगह काम में लाते हैं। और कोई कोई उसे दूसरी बार शीशी चढ़ाते समय कज्जली में मिला देते हैं।

परीक्षा—

मकरध्वज कसौटी पर घिसने से पीलापन या कालापन न दे, और औषधि रूप में मात्रा देने पर अवश्य लाभ हो, वज़न खूब हो, रात को भी अच्छी प्रकार चमकता हो, अधिक पीसने से अधिक सुर्ख हो यही मकरध्वज की परीक्षा है।

चन्द्रोदय और रससिंदूर—

मकरध्वज और रससिंदूर या चन्द्रोदय भिन्न वस्तु नहीं है। बंगाल के कविराज द्विगुण गन्धक के साथ छोटो शीशी में कूपी पाक करते हैं इससे शीशी का समस्त भाग विशेष अग्नितप्त होने के कारण मकरध्वज का रवा खिल जाता है। परन्तु बम्बई वाले तथा युक्तप्रान्त वाले थोड़ा माल विशेष बड़ी शीशी में चढ़ाते हैं और नलिका बनाने का विशेष प्रयत्न करते हैं इससे माल मध्यमाग्नि के समय ही नलिका में चढ़ कर ठंढा हो जाता और जम जाने से कठोर रहता है। यही इन दोनों में अन्तर है। कुछ ग्रन्थकारों ने मकरध्वज आदि में गन्धक और सुवर्ण को न्यूनाधिकता रख कर और अनेक वर्त्तमान वैद्यों ने विज्ञापनी माहात्म्य बढ़ाकर अथवा संस्कार भिन्नता का आश्रय लेकर "सिद्ध मकरध्वज, सिद्ध कल्प मकरध्वज, सिद्ध स्वर्ण सिंदूर" आदि उपाधियाँ बताई हैं, पर मूल में यह सब एक ही प्रकार के कूपी पक्व रस हैं। इसी प्रकार शतमल्ल (संखिया) मिलाकर बनाया हुआ मल्ल चन्द्रोदय, नाग मिलाकर नाग सिंदूर, हरताल मिलाने से ताल सिंदूर

बनता है। इन सब के गुणों में अन्तर होता है। प्रत्येक में वह गुण विशेष होता है जो चीज़ उसमें मिलाकर बनाया जाता है। वास्तव में ये सब पारद के सिन्दूरीकरण के विधान हैं। यह भी एक प्रकार की पारद की भस्म ही है। परन्तु यह सब दो प्रकार के होते हैं।

एक नलिकास्थ दूसरा तलस्थ।

गुण भेद—

नलिका के रस से तलस्थ विशेष अच्छा होता है। उसके गुणों में भी अन्तर पाया जाता है। यह अन्तर बहुत ध्यान देने पर जाना जा सकता है। पर नीचे लिखे अन्तर स्पष्ट प्रतीत होते हैं।

नलिकास्थ—	तलस्थ—
तोड़ने में सख्त	तोड़ने में मुलायम
हलकीचमकदार	अच्छी चमकदार
मोटी बत्ती	छोटे छोटे टुकड़े
न्यून सुवर्ण-युक्त	विशेष सुवर्ण-युक्त
कालापन लिये लाल	गहरा लाल
न्यूनगुण-युक्त	अधिक गुण-युक्त

मकरध्वज में मनुष्य को प्रकृतिस्थ करने, शरीर के समस्त यंत्रों को कार्योपयोगी बनाने और विकृत दोषों को योग्य दशा में

जाने का विशेष गुण है। कभी कभी मरणासन्न रोगी को देने पर इसका चमत्कार तत्काल देखने में आता है। और रोगों में कुछ देरी भी लगती है। पर जो लाभ होता है वह स्थायी होता है। यह हमारा खास अनुभव है। इतना स्थायी गुण अन्य किसी चिकित्सा-शास्त्र की औषधि में नहीं पाया जाता।

मात्रा—

जन्म से ५ वर्ष तक की अवस्था के बालक को २ चावल भर। ६ वर्ष से १२ वर्ष तक की अवस्था वाले को ३ या ४ चावल भर। पूर्ण मात्रा ६ चावल से १ रत्ती तक।

सेवन विधि—

जिस समय यह सेवन करना हो उस समय इसे जिस रस, अर्क या शहद में चाटना हो, उसी में अच्छी प्रकार मिला कर पीस लेना। यदि इसके साथ कोई अन्य औषध हो तो उसे भी पीस कर मिलाना और चाट लेना। अनुपान में यदि कोई पतली चीज अर्क दूध आदि हो तो चाटने के बाद पीना चाहिये। आगे चल कर रोगानुसार जो मिलाने वाली औषधियों का परिमाण लिया जायगा वह पूरी मात्रा और पूरी अवस्था के लिये लिखा जायगा। इससे छोटी अवस्था वाले बालकों के लिये ऊपर लिखी मात्रा की भाँति इन औषधियों की भी आधी, चौथाई या अष्टमांश मात्रा लेनी चाहिये। जितनी मात्रा चाटने और पीने में बालक को सुविधा हो उतनी ही देनी चाहिये। अनुपान

की औषधें इसमें केवल इसी लिये मिलाई जाती हैं जिससे मकरध्वज को रसायनिक क्रिया स्वास्थ्य-सम्पादन के साथ साथ उन्हीं रोगों पर—जिन पर कि मकरध्वज दिया जा रहा हो—विशेष रूप से हो। आगे वाली अनुपान विधियों से चंद्रोदय, स्वर्ण-सिंदूर देने में कोई बाधा नहीं है।

समय—

अधिक पुराने रोगों में ५ या ३ दिन के अन्तर से १ बार। पुराने रोगों में (जो दो वर्ष तक के हों) प्रति दिन १ बार। नवीन रोगों में दिन में २ बार। सन्निपात या इससे भी किसी मारक अथवा मोहक (बेहोश करने वाले) रोगों में दिन में कई बार भी दिया जा सकता है।

विशेष—

जिस समय मकरध्वज सेवन किया जाय; उस समय उसमें मकरध्वज के अनुपान के अतिरिक्त कोई औषधि न मिलाई जाय। अन्य कोई भी रोग नाशक दवा खाना आवश्यक हो तो उसे इसका एक घंटा समय टाल कर दे सकते हैं। इस प्रकार अन्य औषधि देने में कोई बाधा नहीं है।

पथ्यापथ्य—

यदि किसी रोग के कारण मकरध्वज सेवन करना हो तो जिस रोग में यह खाना हो उसी के परहेज करना चाहिये। पर, केवल रसायन रूप से सेवन करना हो तो नीचे लिखी चीजें खा

कर्तव्य परित्याग करना चाहिये—

द्रव (पतले) पदार्थों का अति सेवन, अधिक भोजन करना, बहुत सोना, रात का जगना, बहुत मैथुन करना, पेट भारी करने वाले (अफरा देने वाले) पदार्थ खाना, क्रोध करना, दुःखप्रद या लालच के कामों को करना, जल-क्रीड़ा, बहुत चिन्ता करना परित्याग कर देना चाहिये।

इसी प्रकार कुम्हड़ा, ककड़ी, करेला, कलौंदा, (तरबूज) कसूंभ, बांझ ककोड़ा, केला, मकोय, मांस, तिल, सरसों, राई खटाई, मिर्च न खाना चाहिये।

शास्त्रों में यद्यपि इसके परहेज में बहुत चीजें लिखी हैं तथापि वे सभी चीजें अपने किसी न किसी दुर्गुण से त्याज्य हैं, अतः रोगकारक सभी चीजें प्रत्येक मनुष्य को कुपथ्य समझ कर परित्याग कर देना चाहिये।

पुराना गेहूं पुराना चावल, गौ का दूध, घी, दही, स्वच्छ जल मूंग की दाल इत्यादि चीजें पथ्य हैं। फलों और मेवा में मीठा अनार, अंगूर, सेव, नासपाती, मुनक्के, अंजीर, छुहारा, बदाम पिस्ते खाना पथ्य है।

मकरध्वज को रोगानुसार देने की व्यवस्था।

नवज्वर—

तुलसीपत्र या बेलपत्र का रस १॥ माशे (४० बूंद) शहद १॥ माशे, मकरध्वज एक या आधी रत्ती मिलाकर देना।

ज्वर में कफ के लक्षण अधिक हों तो पान या अदरक का रस १॥ मासे शहद १॥ मासे मकरध्वज एक रत्ती मिलाकर चटाना। यदि पित्त-ज्वर का कोप हो तो परवल का रस ३ मासे मिश्री १॥ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना। साधारण ज्वर में तुलसीपत्र का रस १॥ मासे, काली मिर्च का चूर्ण ४ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर दिन में दो बार चटाना चाहिये।

सन्निपात ज्वर—

अदरक या पान का रस ३ मासे, शहद १॥ मासे, कस्तूरी १ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर दिन में ३।४ बार चटाना। कोई कोई वैद्य पान के रस में आक की जड़ का दो रत्ती चूर्ण मिलाकर भी मकरध्वज चटाते हैं। सन्निपात में दिन रात में ६ या ८ बार दवा देना और अन्य औषधियों (धूला, अंजन, नस्य, धूप, लेप आदि) की आवश्यकता हो तो यथासमय करना।

जीर्णज्वर—

संभालू के पत्तों का रस २ मासे, परवल के पत्ते का रस २ मासे, शहद १॥ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। अथवा—गिलोय का रस ३ मासे, शहद १॥ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। खाँसी हो तो इन्हीं योगों में १ रत्ती छोटी पीपल का चूर्ण या कायफल का चूर्ण मकरध्वज मिलाकर

चटाना। पेट की खराबी हो तो गिलोय का रस ३ मासे शहद १॥ मासे नागरमोथे का चूर्ण ४ रत्ती मकरध्वज मिलाकर चटाना। कफ में कुछ खून आता हो तो बाँसे के पत्तों का रस १॥ मासे, गिलोय का रस ३ मासे, शहद १॥ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना।

यकृत् और प्लीहा (तिल्ली)—

रोहेड़े के पत्तों का रस १॥ मासे (या रोहड़े की छाल का चूर्ण १ मासे) मंडूर १ मासे, शहद १॥ मासे मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना। या बड़ी हड़ की छाल १ मासे, विड लवण ४ रत्ती, भुना हींग दो चावल भर, नींबू का रस या अनार का रस ६ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। हीरा कसीस १ रत्ती, सेंधा नमक ४ रत्ती मकरध्वज मिलाकर ठंढे जल से देना। नीम की छाल का काढ़ा ६ मासे, दारु हलदी का बारीक चूर्ण ४ रत्ती जवाखार ४ रत्ती मकरध्वज मिलाकर चटाना।

अतिसार (दस्त पेचिस)—

इन्द्रजौ १ मासे, कत्था १ मासे, शहद ३ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। अथवा जामुन के पत्तों का रस १॥ मासे, अनार के फूल ४ रत्ती, शहद १॥ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। या धाई के फूल ४ रत्ती, चावल का धोवन ३ मासे, शहद १॥ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। यदि दस्तों में

आँव और खून जाता हो (और ज्वर न हो) तो सफेद दूब का रस १॥ मासे, आम की गुठली का चूर्ण १ मासे, शहद ३ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। या कुड़ा की छाल का काढ़ा ६ मासे सौंफ पिसी हुई ६ रत्ती, शहद १॥ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना।

ज्वरातिसार—

नागर मोथा का चूर्ण ४ रत्ती, बेल की पत्ती का रस ३ मासे, शहद ३ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। अथवा अनार के पत्तों का रस ३ मासे, शहद ३ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना।

संग्रहणी—

यदि रोग नवीन हो तो—नागरमोथा का चूर्ण ४ रत्ती, अतीस का चूर्ण २ रत्ती, शहद १॥ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। अथवा बेलगिरी का चूर्ण ६ रत्ती, शहद ३ मासे मिलाकर चटाना और ऊपर से तयार किया हुआ सोंठ का काढ़ा दो तोले पिलाना। यदि रोग पुराना हो तो आँवले का रस ३ मासे, मेथी का चूर्ण ४ रत्ती, शहद १॥ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। या गिलोय का रस ३ मासे नागरमोथा अथवा बेलगिरी का चूर्ण ४ रत्ती, शहद ३ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना।

अर्श (बवासीर)—

यदि खून जाता हो तो नागकेशर का चूर्ण ६ रत्ती, मक्खन ६ मासे मिश्री ३ मासे मकरध्वज मिलाकर दिन में २-३ बार चटाना। अथवा—काले तिल ३ मासे मिश्री तीन मासे पीसकर बकरी का दूध ६ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। या अपामार्ग (लटजीरा) के बीज ४ रत्ती शहद १॥ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना ऊपर से दो या ४ तोले चावल का धोवन पिलाना। यदि बवासीर वादी हो और खून न जाता हो तो बड़ी हरड़ का चूर्ण ६ रत्ती, हरसिंगार के फूल का चूर्ण दो रत्ती शहद ३ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना। या चित्रक का चूर्ण ४ रत्ती, बड़ी हरड़ का चूर्ण ४ रत्ती, शहद ३ मासे मकरध्वज मिलाकर चटाना।

कृमि--रोग—

अनार के पत्तों का रस ३ मासे, वायविडंग का चूर्ण १॥ मासे, शहद ३ मासे मकरध्वज १ रत्ती मिला कर दोनों समय चटाना। अथवा वायविडंग का चूर्ण १॥ मासे विलास पापड़ा १॥ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना और ऊपर से दो आने भर गोमूत्र १ छटाँक पानी में मिलाकर पिलाना। अथवा करेले के पत्तों का रस ३ मासे, कमेला ४ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर दोनों समय चटाना। इस प्रकार ५ या ७ दिन दवा खाकर एक दिन बड़ी हरड़ का छिलका

३ मासे, गुलाब के फूल १॥ मासे, सनाय ३ मासे, मिश्री १ तोले पीसकर पाव भर गरम जल से देना। इससे कृमि या दूषित मल और कृमि दोनों से पेट शुद्ध हो जाता है।

पाण्डु कामला—

बड़ी हरड़ का छिलका, बहेड़े का छिलका आँवला १। १ तोले लेकर रात को पाव भर जल में मिट्टी के पात्र में भिगोना। सबेरे मल कर छान कर शीशी में रखना और आधा सवेरे तथा आधा शाम को मकरध्वज (एक रत्ती ३ माशे शहद में मिला कर) चाटकर ऊपर से पिलाना। अथवा बासा के पत्तों का रस ३ माशे, शहद १॥ माशे मण्डूर २ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर दोनों समय चटाना। अथवा गिलोय के रस में ४ रत्ती दारुहलदी को घिसना, इसी में १ रत्ती मकरध्वज घिस कर चटाना।

रक्तपित्त—

यदि रक्तपित्त नया हो और मुख नासिका आदि से रक्त जाता हो तो सफेद दूब का रस ३ माशे शतावर का रस ३ माशे (या पिसी हुई शतावर १ माशे) शहद ३ माशे, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना। अथवा—गूलर का रस १ तोले मिश्री ३ माशे, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना।

यदि रक्तपित्त पुराना हो और खून मल या मूत्र की राह

से जाता हो तो आँवले का ताजा रस ६ माशे, सफेद चन्दन ४ रत्ती (घिस लेना) मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना। अथवा धनियाँ १ मासे, बासा के पत्तों का रस ३ मासे बकरी का दूध २॥ तोले, मिश्री १ तोले मिला कर मकरध्वज के ऊपर से पिलाना। पहिले मकरध्वज शहद में मिला कर चटा देना।

राजयक्ष्मा—क्षयी रोग—

शुद्ध मोती या शुद्ध मूंगा १ रत्ती बासा के पत्तों का रस १॥ मासे शहद ३ मासे मकरध्वज मिला कर दिन में कई बार चटाना। अथवा—शुद्ध मोती भस्म एक रत्ती, बेदाना अनार का रस ६ मासे मिश्री ३ मासे और मकरध्वज १ रत्ती मिला कर दिन में ३ बार चटाना। या—प्रवाल भस्म १ रत्ती, सोने का वर्क २ चावल भर, शर्बत बनफशा ६ मासे मकरध्वज मिला कर चटाना। साधारण स्थिति में मोती की एवज में मोती की सीप भी ले सकते हैं। इन प्रयोगों में रोगी को पथ्य में केवल बकरी का दूध देना, और कोई दूध न देना।

कफ—खाँसी—

अदरख का रस १ मासे, कायफल का चूर्ण १ रत्ती, शहद १॥ मासे मकरध्वज मिला कर सवेरे शाम चटाना। अथवा—पान का रस १॥ मासे, हरिणशृङ्ग भस्म १ रत्ती,

शहद ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना।

सूखी खांसी—

बिही दाना या अलसी का लुआब ६ मासे, मिश्री ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना। अथवा—जूफा चार रत्ती, मुलेठी चार रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती पीस कर शहद में मिला कर चटाना। अथवा—छोटी पीपल १ रत्ती, खैर-सार २ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती, एक तोला शर्बत जूफा में मिला कर चटाना।

फुप्फुसभित्तिशोथ (न्यूमोनिया)—

कायफल का चूर्ण १ रत्ती, सीतलचीनी पिसी हुई ४ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर शहद में चटाना।

शीतकास—

शीतकाल में गरद गुबार अथवा हलकी सरदी लगने से जो खाँसी होती है उस पर बहेड़े का चूर्ण ४ रत्ती मकरध्वज १ रत्ती मिला कर शहद में चटाना।

शीतकोप—

शीत जल, शीत वायु से अथवा ज्वर में शीत आ जाने के कारण सर्वाङ्गशीतलता में पान या अदरख का रस ६ मासे, शहद ३ मासे, कस्तूरी १ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर २। २ घण्टे या इससे भी शीघ्र चटाना और रोगी की शीतलता दूर करने के अन्य उपाय भी करना।

स्वरभेद—

मुलेठी ४ रत्ती, गोल मिर्च ४ दाने, मकरध्वज १ रत्ती पीस कर शहद में चटाना। अथवा—बच का चूर्ण १ रत्ती मकरध्वज १ रत्ती पीसकर शहद में चटाना। अथवा—ब्राह्मी का स्वरस ३ मासे, कुलींजन का चूर्ण ४ रत्ती, शहद ३ मासे मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

श्वास—

बिल्वपत्र का रस ३ मासे, शहद ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना। अथवा—बहेड़े की गिरी १॥ मासे, छोटी इलायची एक, मकरध्वज १ रत्ती शहद में मिला कर चटाना। अथवा—वच या भाडङ्गी का चूर्ण ४ रत्ती, शहद ३ मासे मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

मन्दाग्नि—

अजवायन (पिसी हुई) ४ रत्ती, चित्रक चूर्ण २ रत्ती, चूर्ण २ रत्ती, सेंधा नमक २ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती सब एक तोले जल में मिलाकर पी जाना।

अजीर्ण—

अजीर्ण हो तो ऊपर लिखा हुआ मंदाग्नि का प्रयोग करना। अथवा—१ तोला गुलाब जल में ५ काली मिर्चे और १ रत्ती मकरध्वज घोलकर पिलाना।

अरुचि—

अनारदाने का रस ६ मासे, भुनाजीरा ४ रत्ती, सधा नमक २ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना। अथवा—जिरिश्क १ मासा, काली मिर्च ४ दाने, भुना हींग १ रत्ती, सेंधा नमक २ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

तृष्णारोग—

बड़ की जड़ ३ मासे, मिश्री ३ मासे चावल का धोवन १ तोला में पीसकर १ रत्ती मकरध्वज मिलाकर चटाना। अथवा—बिहीदाने का लुआब ६ मासे, मिश्री ४ रत्ती, धनिया पिसा हुआ ४ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

अम्लपित्त—

परवल की पत्ती का रस ६ मासे, मिश्री पिसी हुई ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना। अथवा मीठे अनार का रस १ तोला शुद्धि शुक्ति २ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना। कुछ कब्ज रहता हो तो काला नमक २ रत्ती, अजवायन १ मासे अर्कगुलाब में पीसकर एक रत्ती मकरध्वज मिलाकर चटाना

अण्डवृद्धि, अन्त्रवृद्धि—

अण्डकोष के बढ़जाने पर १ मासे शुद्ध गन्धक, ३ मासे शहद, १ रत्ती मकरध्वज मिलाकर चटाना। सप्ताह में एक बार या दो बार २॥ तोले अण्डी का तेल, पाव भर गरम दूध,

आधी छटांक मिश्री मिलाकर पिलाना।

शोथ रोग (सूजन)-

बिल्वपत्र का रस ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना। अथवा—पुनर्नवा का रस ३ मासे, शहद ३ मासे, कमरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना। अथवा सूखी मूली और पुनर्नवा की जड़ ६।६ मासे कूटकर पाव भर पानी में औटाना, आधी छटांक पानी बाकी रहने पर १ रत्ती मकरध्वज मिलाकर पिलाना।

मूर्च्छा-

पके हुए कुम्हड़े का रस ६ मासे, सफेद चन्दन १ मासे, (उसी में घिस देना)१ रत्ती केसर, १ रत्ती मकरध्वज मिलाकर चटाना। अथवा—त्रिफला का जल ६ मासे, शहद १ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना। इसी प्रकार पटोल पत्र अथवा शतावरी के रस में मकरध्वज देने से भी लाभ होता है।

अपस्मार (मिरगी)-

ताजा शंखपुष्पी या ब्राह्मी का रस ६ मासे, दूधिया बच का चूर्ण ८ रत्ती, शहद ३ मासे मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना। अथवा—केवल बच का चूर्ण १॥ मासे, शहद ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना। इस रोग में जैसी प्रबलता हो उसी प्रकार दिन में १ बार से ४ बार तक यह प्रयोग करना।

उन्माद (पागलपन)–

इस रोग में अपस्मार की भाँति मकरध्वज सेवन कराना।

अधीरता (घबराहट)–

परवल की पत्ती का रस ३ मासे, सफेद चन्दन (घिसा हुआ) १ मासे, शहद ३ मासे मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना। अथवा—बड़ा इलायचीदाना ६ रत्ती, बहेड़े की गिरी, मकरध्वज १ रत्ती पीस कर ३ मासे शहद मिला कर चटाना। अथवा—शुद्ध सीपी का चूर्ण २ रत्ती, बंसलोचन दो रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना। यह प्रयोग दिल की धड़कन पर भी अनुभूत है।

अनिद्रा–

नींद न आती हो तो—जटामांसी का भिगोया जल ६ मासे, सफेद चन्दन (घिसा हुआ) १ मासे, शहद १॥ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात–

केला के डण्ठल का रस ६ मासे, छोटी इलायची १, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर पिलाना। अथवा—केले के रस की जगह त्रिफला का रस देना। अथवा खरबूजा और ककड़ी के बीज ३।३ मासे, आधी छटांक गुलाब के अर्क में घोटकर ३ मासे मिश्री और १ रत्ती मकरध्वज मिला कर चटाना।

अथवा—अर्क गुलाब के स्थान में कुश की जड़ या पंच-तृणमूल का रस भी ले सकते हैं। अथवा—बिहीदाने का लुआब १ तोला, सत बिरोजा ४ रत्ती, मिश्री ६ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना।

सुज़ाक-

केसर १ रत्ती, सीतलचीनी ८ रत्ती पीसकर १ रत्ती मकरध्वज के साथ २ तोले शर्बत बनफसा या शर्बत नीलोफर में चटाना। अथवा—ईसबगोल की भूसी १॥ मासे, मिश्री ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती गौ के दूध में देना।

अश्मरी (पथरी)-

कुलथी का काढ़ा १ तोला, पाषाणभेद का चूर्ण ४ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर पिलाना। अथवा—कुश की जड़ का रस २ तोले, गोखरू पिसा हुआ १ मासा, मकरध्वज १ रत्ती, मिश्री १ मासा मिला कर चटाना। अथवा—बरना की छाल का (१६ वां हिस्सा बाकी रक्खा हुआ) काढ़ा ६ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

बहुमूत्र-

गूलर का चूर्ण ३ मासे, केसर १ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर शहद में चटाना। अथवा—प्रमेह का कोई प्रयोग दिलाना।

प्रमेह–

त्रिफला का भिगोया जल १ तोला, बबूल का गोंद २ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिला कर पिलाना। अथवा—त्रिफला का जल १ तोला मिश्री ६ मासे, भुनी हुई हलदी २ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती पिलाना। ऊपर लिखे दोनों प्रयोग ताजे आंवले के रस से भी किये जा सकते हैं। अथवा—गुर्च का ताजा रस ६ मासे, शहद ३ मासे मकरध्वज १ रत्ती मिला कर चटाना।

हस्तपदचक्षु-दाह—

सितोपलादि चूर्ण ४ रत्ती, अनार का रस १ तोले, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

रक्त दोष—

अनन्त-मूल या मुंडी का काढ़ा १ तोला, मकरध्व १ रत्ती मिला कर चटाना।

आतशक—

चोपचीनी का चूर्ण ३ मासे, अनन्तमूल चूर्ण ३ मासे त्रिफला का जल १ तोला, शहद ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

कुष्ठ (कोढ़)—

काला जीरा ३ मासे, काले तिल ३ मासे कूट कर १ रत्ती मकरध्वज मिलाकर फँकाना, ऊपर से दो तोले खैर की छाल

का काढ़ा पीना। कुष्ठ की जगह पर चाल मुगरा तैल लगाना।

ध्वजभङ्ग (नपुंसकता)—

विदारीकन्द का चूर्ण ३ मासे, विधारा ३ मासे, गौ का घृत १ तोला, कस्तूरी आध रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर खिलाना। ऊपर से पाव भर गरम दूध पिलाना।

धातु-दौर्बल्य—

सुर्ख तूदरी का चूर्ण ३ मासे, ईसबगोल ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती, मिश्री ६ मासे मिलाकर फक्की लगवाना और ऊपर से दूध पिलाना। अथवा—ताजा शतावरी का रस ६ मासे, शहद १ मासे, मिश्री ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

शुक्रदोष, स्वप्नदोष—

मुलेठी का चूर्ण ४ रत्ती, शतावरी का रस ६ मासे, बड़े गोखरू का चूर्ण चार रत्ती, शहद ३ मासे मिलाकर चटाना। अथवा—सेमल के मुसले को चन्दन की तरह घिसकर ६ मासे लेना, इसमें ३ मासे मिश्री और १ रत्ती मकरध्वज मिला कर चटाना।

नेत्ररोग—

त्रिफला का चूर्ण १ मासा शहद ६ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर कुछ समय तक चटाना।

नासारोग—

अदरख का रस १० बूंद, शहद ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना। अथवा—पिसी सौंफ १॥ मासे, पिसा कायफल २ रत्ती, शहद ३ मासे मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

कर्णरोग—

तुलसीपत्र का रस १ मासे, शहद ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

मुखरोग—

वंशलोचन का चूर्ण ४ रत्ती, शुद्ध शुक्ति १ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती, शहद ३ मासे मिलाकर चटाना।

मस्तिष्क-दौर्बल्य—

गौ के दूध का ताजा मक्खन १ तोला, मिश्री ६ मासे, इलायची छोटी १ मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना।

प्रदर—

पठानी लोध का काढ़ा १ तोला, गूलर के फल का चूर्ण (या कल्क) ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना। अथवा—अशोक की छाल का काढ़ा २ तोला, रसोत ३ मासे, शहद ३ मासे, मकरध्वज एक रत्ती मिलाकर चटाना।

कष्टरज—

लाल कमल के डण्ठल का रस ३ मासे, मिश्री ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना। अथवा—भुना हुआ सुहागा २ रत्ती वज २ रत्ती मकरध्वज १ रत्ती पीसकर गरम जल से देना।

प्रसूतिरोग—

दशमूल का काढ़ा १ तोले, केसर १ रत्ती मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर पिलाना। अथवा—बड़ी इलायची का चूर्ण ४ रत्ती मकरध्वज १ रत्ती, शहद ३ मासे मिलाकर चटाना।

मृतवत्सा—

सफेद जीरा १ मासे, पुराना गुड़ ३ मासे, गौ का घी ६ मासे मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर कुछ दिन नियम से चटाना।

बालरोग—

अतीस, काकड़ासिंगी, नागरमोथा, छोटी पीपल समभाग लेकर पीसकर रख लेना। इसे मकरध्वज मिलाकर अवस्था के अनुसार १ रत्ती से १ मासे तक दूध या शहद में मिलाकर देना।

चेचक (माता)—

समालू के पत्तों का चूर्ण २ रत्ती, शहद चार रत्ती, मक-

रध्वज आधी रत्ती मिलाकर बालकों को चटाना।

दुर्बलता और निर्बलता—

बेदाने का रस ६ मासे, शहद ३ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर चटाना अथवा शतावरी का ताजा रस १ तोला गौ का दूध २ तोला, शहद ६ मासे, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर पिलाना।

अकालबार्धक्य—

साने का वर्क १ रत्ती, लौह भस्म १ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर शहद में चटाना। अथवा—स्वर्णमाक्षिक भस्म १ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती, शहद ३ मासे मिलाकर चटाना। इस रोग में यह प्रयोग १ या दो साल तक बराबर होना चाहिये।

मकरध्वज के रोगानुसार सहयोग और अनुपानों का यह दिग्दर्शन मात्र है। इसी प्रकार बुद्धिमान चिकित्सक समय और रोग के अनुसार उपयुक्त अनुपानों की विशेष कल्पना भी कर सकता है।

———



चिकित्सक-ग्रन्थमाला की वैद्यक की

उत्तमोत्तम पुस्तकें।

गृहवस्तु चिकित्सा।

इस में लिखी हुई चिकित्सा के लिये घर से बाहर जाने या दवा दुरमत खरीदने की जरूरत ही नहीं। भाषा ऐसी सरल है कि औरतें भी इसे पढ़कर काम चला सकती हैं। मू० ||)

सरल चिकित्सा।

इसमें हमने अपने २५ वर्ष के तजुर्बे किये हुए ६०० अचूक नुसखे लिखे हैं, जो कभी निष्फल नहीं जाते। चाहे जब आजमा देखिये। वैद्य और गृहस्थ सब के काम की है। इसके चार भाग हैं। चारों भागों का मू० २)

प्रमेह भास्कर।

चाहे जो कोई भी शनाड़ी किसी रोग को प्रमेह बताकर रोगी को बहका देता और रुपया पैसा ठग लेता है। हमने इस पुस्तक में जितने भी प्रमेह जैसे होते हैं उनके कारण, लक्षण, दवा, साध्यासाध्य, अमीर और गरीबों के शास्त्रीय उपचार सहित लिख दिये हैं, जिससे पढ़ा लिखा आदमी खुद अपना इलाज आप कर सके। मू० ≡)

तैल चिकित्सा ।

इस पुस्तक में वे तैल लिखे हैं जो आपके वैद्य बनाना नहीं जानते । अभी तक यह पुस्तक मद्रासी अक्षरों में थी, अब हिन्दी भाषा और देवनागरी अक्षरों में वैद्यों के लिये कर दी गई है । तैलों के बनाने की सरल विधि लिख दी गई है और रोगों का नाम भी लिखा है जिन पर ये तैल पूरा फायदा करते हैं । इनके लगाने से बाज़ बखत ऐसा लाभ होता है कि बड़े बड़े डाक्टर और वैद्य हैरत में आ जाते हैं । मू० ॥)

बाल चिकित्सा ।

बालक जब से जन्म लेता है उसी बखत से यह पुस्तक काम आती है । पैदा होते ही बालक को श्वास दिलाना, रुलाना, साफ करना, नहलाना, सुलाना, दूध पिलाना; बच्चे को माँ को संभालना, उसका कुल काम करना, दाई का काम, बच्चे को पालना, पोसना, खिलाना, सब इसके पहले भाग में लिखा है । दूसरे भाग में बच्चों को होने वाले ८० रोगों का खुलासा वर्णन और उनका देशी इलाज लिखा है । अभी इस पुस्तक की बातें किसी से पूछने बैठोगे तो पूरा वैद्य भी न बता सकेगा । पुस्तक औरत और मर्द सभी के काम की है । मू० सिर्फ ।॥)

प्लेग चिकित्सा ।

प्लेग का निदान, लक्षण, फैलाव, प्रतिषेध, चिकित्सा, और ऊंची ऊंची बातें तथा चिकित्सकों का भ्रम इत्यादि सभी बातें

खूब साफ भाषा में बताई गई हैं। इसमें तत्काल अनुभूत प्रयोग भी दिये गये हैं। मूल्य ।)

रस चिकित्सा।

इसमें सभी रस शोधने, भस्म बनाने और उनके प्रयोग करने की स्पष्ट विधि लिखी गई है। इतनी निसन्देह और स्पष्ट रस बनाने की पुस्तक आज तक नहीं निकली है। मूल्य ॥)

प्रसूतितन्त्र।

३० चित्रों सहित ४०० पृष्ठ की बहुत बड़ी पुस्तक हाल ही में छपकर निकली है। इसमें गर्भ रहने के समय से बच्चा पैदा होने के १० दिन बाद तक की राई रत्ती बातें स्पष्ट भाषा में लिखी हैं। गर्भ की रहन सहन घटना बढ़ना, टेढ़ा मेढ़ा हो जाना, सीधा करना, बच्चा जनाना, मरे बच्चे का निकालना, काटकर बच्चा निकालना, जच्चा का सब काम, दाई का काम, डाक्टर का काम, सोवड़ का काम बड़ी सरल विधि से बताये हैं। चित्रों से पुस्तक अमूल्य हो गई है। अभी तक इसके जोड़ की एक भी अच्छी पुस्तक हिन्दी में सम्पूर्ण रूप से नहीं निकली है। वैद्यक जानने और वैद्यक पढ़ने वालों के लिये बड़े काम की पुस्तक है। इम्तिहान पास करने और डाक्टरी पढ़ने में भी इससे बड़ी भारी मदद मिलती है। मू० २)

नाड़ी विज्ञान।

नाड़ी क्या है? कहाँ से है? इससे क्या जाना जाता है? कब से नाड़ी परीक्षा चली? डाक्टर इसे क्या समझते हैं, इस

से रोग कैसे जाना जाता है ? नाड़ी का शरीर से क्या सम्बन्ध है ? नाड़ी परीक्षा का डाक्टरी यन्त्र इत्यादिक बातें स्पष्ट भाषा में चित्रों सहित छापी गई हैं । हिन्दी में इसके जोड़ की कोई पुस्तक नहीं है । मू०॥।)

आयुर्विज्ञान ।

इस पुस्तक में आयुर्वेद का पूरा कालज्ञान लिखा है । अभ्यास करने और पढ़ते रहने से रोगी के मरने जीने की घड़ी घड़ी भी इससे जानी जा सकती है । पुस्तक सरल भाषा में लिखी है । मू० ।)